ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 597-604

पं. सुर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताओं में किसानों की दशा एवं दिशा

शिवशंकर राजवाड़े
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
पं. ज्वाला प्रसाद उपाध्याय शासकीय महाविद्यालय पटना,
जिला– कोरिया, छत्तीसगढ़, भारत
ईमेल : ssrajwadepatna@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। किसान देश की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का मेरूदंड भी है। किसान 'अन्नदाता' कहलाता है। जब वह खेतों में हल चलाकर अन्न उपजाता है तभी पूरे देश के लोगों को भोजन मिल पाता है । वह स्वयं भूखा रहकर कठिन परिश्रम करके हम सब के लिए भोजन की व्यवस्था करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। उसका जीवन त्यागमय है, किन्तु उसे कदम–कदम पर कठिनाइयों एवं संघर्षों का सामना करना पडता है। खेती के लिये उसे प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है। उसका जीवन प्रकृति द्वारा संचालित होता है। समय पर अच्छी वर्षा हो गयी तो ठीक अन्यथा ? कभी सूखा, कभी बाढ़, कभी अतिवृष्टि, कभी अनावृष्टि आदि कई कठिनाइयों से वह जीवन भर जूझता रहता है। इसके अतिरिक्त ज्यादा उपज हो गयी तो उचित कीमत नही मिलती। उपज अगर ठीक नही हुई तो बीज का भी रकम निकालना मुश्किल, फिर महाजनों एवं पूंजीपतियों द्वारा शोषण सो अलग। किसान जीवन भर संघर्ष करता है। आज के समय ने मनुष्य को हृदयहीन और संवेदना शून्य बना दिया है। वह सिर्फ स्वयं की चिंता करता है, दुसरो की पीड़ा दुख दर्द से उसका कोई सरोकार नहीं है। एक किसान ही है जो सब कुछ कठिनाईयों को झेलते हुए भी दूसरो के लिए कठोर श्रम करता है। उसके पसीने की एक–एक बूँद धरती का सिंचन करके लहलहाती हुई फसलो से भर देती है, जिससे पूरे देश अन्न मिल पाता है। किसान एक देश के आधार से कम नही होते क्योंकि उनके द्वारा पैदा की गयी फसल ही उस देश की पूरी जनता का भरण–पोषण करती है। आज किसान परेशान है,उसकी इस दशा पर अंकिता असरानी लिखती हैं–

"वो कैसे सड़कों पर रात काट रहे,
वक्त हो तो उन सड़कों से गुजर के देखिये!

किसानो का दर्द समझना चाहते हो,
तो जनाब कभी किसानी कर के देखिये!
वो मत देखिये जो आपको दिखाया जा रहा,
वो देखिये जो आपको देखना चाहिए !"[1]

" कोई परेशान है सास –बहू के रिश्तों में,किसान परेशान है कर्ज के किश्तो में।"[2]

ये पंक्तियॉ वर्तमान समय में किसानो पर बिल्कुल सटीक बैठती हैं। किसानो के लिए कर्ज एक ऐसा मेहमान है, जो एक बार आने के बाद जाने का नाम ही नहीं लेता है। किसान के जीवन की समस्याओं को,उसकी पीड़ा एवं दुःख– दर्द को कवियों ने अपनी कविताओं में वाणी दी है। छायावादी कवि पं. सूर्य सुर्यकांत त्रिपाठी निराला एक भारतीय किसान भांति जीवन भर संघर्ष एवं पीड़ा के दौर से गुजरते रहे। उन्होनें किसानों के दुख –दर्द एवं पीड़ा की स्वयं अनुभूति की है। उन्होनें " खेत जोतकर घर आए हैं " नामक कविता में एक गॉव का वर्णन करते हुए एक किसान के खेत जोतकर घर आने के बाद का वर्णन किया हैं । किसान खेतों को जोतकर जब वापस अपने घर को लौटता हैं तो बैलों के कंधों पर लकड़ी का माची रखा हुआ है और उस माची पर किस प्रकार हल को उल्टा कर के रखा गया है इसका वर्णन करते हुए निराला जी लिखते हैं–

" खेत जोतकर घर आये हैं।
बैलों के कंधों पर माची,
माची पर उल्टा हल रक्खा,
बद्धी हाथ, अधेड़ पिता जी,
माता जी, सिर गट्ठल पक्का,
पिता गये गॉवों के गोंड़े,
माता घर, लड़के धाये हैं। " [3]

प्रकृति जब अनुकूल होती है, तभी किसानों के जीवन में खुशहाली आती है। प्रकृति की मार से संत्रस्त किसान की पीड़ा उपर से उस पर करों का बोझ। किसानों की इस पीड़ा को निराला अपनी कविता " कुत्ता भौंकने लगा " में व्यक्त करते हुए लिखते हैंः–

"आज ठंडक अधिक है।
बाहर ओले पड़ चुके हैं,
एक हफ्ता पहले पाला पड़ा था–
अरहर कुल की कुल मर चुकी थी,
हवा हाड़ तक बेध जाती है,
गेहूँ के पेड़ ऐंठे खड़े हैं,
खेतिहरों में जान नहीं,
मन मारे दरवाजे कौड़े ताप रहे है,
एक दूसरे से गिरे गले बातें करते हुए,
कुहरा छाया हुआ।
उपर से हवाबाज उड़ गया।
जमींदार का सिपाही लट्ठ कंधे पर डाले,
आया और लोगों की ओर देख कर कहा,
डेरे पर थानेदार आए हैं,
डिप्टी साहब ने चंदा लगाया है,

एक हफ्ते के अंदर देना है।
चलो, बात दे आओ।
कौड़े से कुछ हट कर
लोगों के साथ कुत्ता खेतिहर का बैठा था,
चलते सिपाही को देखकर खड़ा हुआ,
और भौंकने लगा,
करूणा से बंध खेतिहपर को देख–देख कर। " [4]

गॉव में किस प्रकार जमीदारों का आतंक है इसका चित्रण " झींगुर डटकर बोला " नामक कविता में करतें हुए निराला लिखते है–

" जमींदार का गोड़इत
दोनाली लिए हुए
एक खेत फासले से
गोली चलाने लगा।
भीड़ भगने लगी।
कांस्टेबल खड़ा हुआ ललकारता रहा।
झींगुर ने कहा.
"चूँकि हम किसान– सभा के,
भाईजी के मददगार
जमींदार नें गोली चलवाई
पुलिस के हुक्म की तामीली की ।
ऐसा यह पेंच है। " [5]

किसानो का शोषण जमीदारों एवं ताल्लुकेदारों द्वारा किया जाता है। जमीदारों द्वारा किस प्रकार आतंक किया जाता है, उसे अपनी कविता " छलांग मारता चला गया " में निराला लिखते है–

" जमीदार के सिपाही की
लाठी का गूला, लोहा बँधा,
दरवाजे गढ़ा कर जाता है। " [6]

" लाठी का यह लोहा बँधा गूला जो किसान के दरवाजे पर गढ़ा कर जाता है, जमीदारी आतंक का प्रतीक है और वस्तुस्थिति का सही प्रतीक है। [7]" झींगुर डटकर बोला " कविता में जमीदार का सिपाही किसान सभा के सदस्यों पर गोली चलाता है। सन् 24 से 46 तक– तुझे बुलाता कृषक अधीर से लेकर झींगुर डटकर बोला तक – निराला की कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में चित्रित किसान भारत के स्वाधीनता– आंदोलन के उतार–चढाव का नक्शा प्रस्तुत करते हैं । "[8]

एक लड़की जब किसी परिवार की बहू बनती है तो उसके मन में कई उमंगें जन्म लेती हैं,कई सपने तैरते हैं, वह अपने आप को सम्राज्ञी से कम नहीं समझती पंरतु एक किसान की नई बहू की दशा एवं उसके ऑखों में बसे हुए सपनों की क्या स्थिति होती है ? वह अपने को कैसी स्थिति में पाती है ? इसका चिंतन करते हुए निराला अपनी कविता " वे किसान की नयी बहू की ऑखें " में लिखते हैं–

" नही जानती जो अपने को खिली हुई–
विश्व–विभव से मिली हुई,–
नहीं जानती सम्राज्ञी अपने को,–
नही कर सकी सत्य कभी सपने को,
वे किसान की नयी बहू की ऑखें
ज्यो हरीतिमा में बैठे दो विहग बन्द कर पॉखें,
वे केवल निर्जन के दिशाकाश की,
प्रियतम के प्राणों के पास– हास की,
भीरू पकड़ जाने को है दुनिया के कर से–
बढ़े क्यों न वह पुलकित हो कैसे भी वर से । " [9]

किसानों की दशा बड़ी शोचनीय होती है उसे हर पल दुःख एवं कठिनाई झेलने पड़ते हैं। उनकी दीन –हीन दशा का चित्रण करते हुए " बादल राग " नामक कविता में निराला बादल को विप्लवी वीर सम्बोधित करते हुए क्रांति का आह्वान करतें हुँ। "क्रांति की सार्थकता है किसानों की मुक्ति में। अंग्रेजी राज और जमींदारी शासन के दोहरे उत्पीड़न से जो किसान को मुक्त करे, वही सच्चा क्रांतिकारी है।" [10] निराला " बादल राग" नामक कविता में लिखते हैं –

" जीर्ण बाहु , है शीर्ष शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लय के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़–मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार !" [11]

किसान के जीवन में संघर्ष है वह चारो ओर समस्याओं से घिरा हुआ है, किन्तु निराला के मन में आशा की एक किरण है, कि जरूर एक दिन ऐसा भी आयेगा जब किसान के जीवन में भी परिवर्तन आयेगा, उसकी स्थिति भी बदलेगी। "किसानों को शिक्षित किये बिना , उनके साथ रहकर, उन्ही का– सा जीवन बिताकर , उनका संगठन किये बिना भारत स्वाधीन नही हो सकता , निराला का यह दृढ विश्वास था।"[12] "जल्द– जल्द पैर बढ़ाओ" नामक कविता के माध्यम से अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए निराला लिखते हैं–

" जल्द– जल्द पैर बढ़ाओ, आओ,आओ !
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अँधेरे का ताला,
एक पाठ पढ़ेंगें टाट बिछाओ !
यहॉ जहॉ सेठ जी बैठे थे
बनिये की ऑख दिखाते हुए,
उनके ऐंठाए ऐंठे थे
धोखे पर धोखा खाते हुए,
बैंक किसानों का खुलाओ।

सारी सम्पत्ति देश की हो,
सारी आपत्ति देश की बने,
जनता जातीय वेश की हो,
वाद से विवाद यह ठने,
कॉटा कॉटे से कढ़ाओं ।"[13]

"जमींदारों की सहायता से अंग्रेज किसानों का शोषण किस तरह करते हैं, इस पर निराला ने लिखा था– पाट, सन, रूई गल्ला आदि जितना कच्चा माल यहॉ पैदा होता है, मुॅहमॉगे दामों पर ही दिया जाता है। किसान लोगों में माल रोक रखनें की की दृढ़ता नहीं , और उस दृढ़ता की जड़ भी काट दी गई है। कारण, लगान उन्हें रूपयों से देना पड़ता है, खेत की पैदावार का तिहाई –चौथाई हिस्सा नहीं। समय पर लगान देने का तकाजा उन्हे विवश कर देता है, वे मुॅहमॉगे भाव पर माल बेच देते हैं। यह इतनी बड़ी दासता है, जिसका उल्लेख नहीं हो सकता । आजकल के किसान यह बात भूल गए हैं कि माल उनका है, इसलिए वे ही उसके दामों के निर्णायक हैं। वे बाजार की तरफ ऑखे फाड़े हुए भाव का रास्ता देखते रहते हैं। अगर कुछ दिन के लिए भी माल वे रख छोड़ें ,तो समय पर लगान न दे सकने के कारण उन पर जमींदारों की बेभाव की पड़ती है। इस तरह वे सोलहों आने विवश हैं।" [14]

देश की आजादी के बाद भी किसानों की दशा उतनी अच्छी नहीं है। कई प्रकार की योजनाऍ उसके लिए चलाई गयी फिर भी वह बेहाल है पंचवर्षीय योजनाओं और अकूत विदेशी ऋण से समृद्ध नौकरशाही के स्वाधीन भारत में निर्धन किसान की दशा का वर्णन करतें हुए निराला अपनी कविता "गहरी विभावरी शीत की" में लिखते हैं –

"गहरी विभावरी शीत की,
कॉपी पाले से अरहर की
ड़ाली गुनागरी, शीत की 0
सूख गया किसान एकाकी
रोया, रहा न लेखा बाकी,
कर्म धर्म को करके साखी,
दुहरी डगर भरी, शीत की 0 "[15]

इस दुनिया में भले ही किसान को न्याय न मिले परंतु एक ऐसी भी दुनिया है जहॉ सही कार्यों का सही प्रतिफल मिलता ही है। निराला को भी आशा है कि जरूर किसान को उसके श्रम का, परिश्रम का सच्चा प्रतिफल मिलेगा। उस दुनिया में जिसे सभी ईश्वर का दरबार कहते हैं। इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति निराला की कविता " प्रियतम " में हुई है, जिसमें भगवान विष्णु एक सज्जन किसान को अपना सबसे प्रिय भक्त स्वीकार करके एक परिश्रमी किसान के श्रम एवं परिश्रम को मान देते हैं–

" एक दिन विष्णुजी के पास नारद जी,
पूछा,"मृत्युलोक मे कौन है पुण्यश्यलोक
भक्त तुम्हारा प्रधान?"
विष्णुजी ने कहा, "एक सज्जन किसान है
प्राणों से भी प्रियतम।"
"उसकी प्रतिक्षा लूगा", हॅसे विष्नु सुनकर यह,
कहा कि, "ले सकते हो। "

नारद जी चल दिए
पहुॅचे भक्त के यहॉ देखा,
हल जोतकर आया वह दोपहर को,
दरवाजे पहुॅचकर राम जी का नाम लिया,
स्नान भोजन करके
फिर चला गया काम पर।
शाम को आया दरवाजे पहुॅचकर फिर नाम लिया,
प्रातः काल चलते समय
एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया।
बस केवल तीन बार ?"
नारद जी चकरा गए–
किन्तु भगवान को किसान ही याद आया?
गए विष्णुलोक
बोले भगवान से
" देखा किसान को
दिन भर मे तीन बार
नाम उसने लिया है।"
बोले विष्णु, "नारद जी,
आवश्यक दूसरा
एक काम आया है
तुम्हे छोड़कर कोई
और नहीं कर सकता।
साधारण विषय यह।
बाद को विवाद होगा,
तब तक यह आवश्यक कार्य पूरा कीजिए
तैल– पूर्ण पात्र यह
लेकर प्रदक्षिणा कर आइए भूमंडल की
ध्यान रहे सविशेष
एक बूॅद भी इससे
तेल न गिरने पाए।"
लेकर चले गए नारद जी
आज्ञा पर धृत–लक्ष्य
एक बूॅद तेल उस पात्र गिरे नही
योगिराज जल्द ही
विश्व पर्यटन करके
लौटे बैकुंठ को
तेल एक बूॅद उस पात्र गिरा नही

उल्लास मन मे भरा था
यह सोच कर तेल का रहस्य एक
अवगत होगा नया।
नारद जी को देखकर विष्णु भगवान ने
बैठाया स्नेह से
कहा, " यह उत्तर तुम्हारा यही आ गया
बतलाओं, पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया ?"
" एक बार भी नहीं ।"
शंकित हृदय से कहा नारद ने विष्णु से
" काम तुम्हारा ही था।
ध्यान उसी से लगा रहा
नाम फिर क्या लेता और ?"
विष्णु ने कहा," नारद
उस किसान भी काम
मेरा किसान का,भी काम
मेरा दिया हुया है।
उत्तरदायित्व कई लादे है एक साथ
सबको निभाता और
काम करता हुआ
नाम भी वह लेता है
इसी से है प्रियतम।"
नारद लल्जित हुए,
" कहा यह सत्य। " [16]

निराला का किसानों से गहरा लगाव था । उनका यह लगाव ही उनकी कविता के माध्यम से व्यक्त हुआ है। किसान का शोषण कई मुहानों पर होता है। वह सभी प्रकार के अघातों को सहते हुए भी कभी विचलित नहीं होता, अपने कर्त्तव्य पथ पर डटा ही रहता है। निराला ने किसानों की व्यथा को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करके यथार्थ स्थिति को दृष्टिगत कराने का प्रयास किया है। निराला को आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस स्थिति में परिवर्तन आयेगा। किसान के श्रम को पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। यहॉ तक कि ईश्वर के दरबार में भी न्याय की आशा वे लगाए हुए हैं कि उसके श्रम एवं कठोर परिश्रम को समुचित मान सम्मान प्राप्त होगा। अगर हम विश्व सभ्यता की बात करें तो विश्व का सबसे उपेक्षित किन्तु सबसे मेहनतकश समाज कृषक समाज है। उसकी इस स्थिति में परिवर्तन लाने की अतीव आवश्यक्ता है। निराला के सामने सबसे अधिक पिछड़ा एवं पीड़ित किसान था। निराला का सहज भाव बोध किसान के साथ गहराई के साथ जुड़ा हुआ है। किसान में असीम शक्ति है, उसमें अंग्रेजी साम्राज्यवाद से लड़नें की अदम्य क्षमता है साथ ही रूढ़ियों एवं परंपराओं में जकड़े हुए सामंती बंधनों को तोड़कर भारतीय समाज

की प्रगति का द्वार खोलने वाली शक्ति भी है । किसान का यह रूप निराला की कविताओं में सर्वत्र बिखरा हुआ है। साथ ही निराला प्रकृति एवं देश की सांस्कृतिक समृद्धि का मुख्य आधार किसान को ही मानते हैं। किसानों के साथ सहज बोध संबंधों से निराला दृढ़ रूप से बंधे हुऐ हैं। उनकी संवेदना किसानों के साथ पूर्ण रूप से जुड़ी हुई है, जिसे उन्होनें अपनी कविताओं के रूप में वाणी दी है।

संदर्भ ग्रन्थ –

- कुशवाहा, डॉ0 अमित कुमार सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में किसान की वेदना,RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal February 2019, पृष्ठ – 233
- नवल , नंदकिशोर, निराला रचनावली–2, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 5 वॉ संस्करण –2014 , पृष्ठ – 448
- वही , पृष्ठ – 187 –188
- वही , पृष्ठ –188
- वही, पृष्ठ – 200
- शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना भाग– 02, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 11 वॉ संस्करण –2022, पृष्ठ – 30
- वही, पृष्ठ – 30
- निराला, विवेक, निराला संचयन, , राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पहला संस्करण –2018, पृष्ठ – 112
- शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना भाग– 02, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 11 वॉ संस्करण –2022, पृष्ठ – 26
- निराला, विवेक, निराला संचयन, , राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पहला संस्करण –2018, पृष्ठ – 42–43
- शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना भाग– 02, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 11 वॉ संस्करण –2022, पृष्ठ – 27
- निराला, विवेक, निराला संचयन, , राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पहला संस्करण –2018, पृष्ठ – 148
- शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना भाग– 02, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 11 वॉ संस्करण –2022, पृष्ठ – 28
- नवल , नंदकिशोर, निराला रचनावली–2, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, 5 वॉ संस्करण –2014 , पृष्ठ – 479–480
- http://Kavitakosh.org>प्रियतम
- https://storisedilse.in hindi-poems